Gyanvividha [A Peer Reviewed and Refereed Journal] March 2024 : Year-1, Vol-2 : PP-39-41

ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
March 2024 : 1(2)39-41
©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

डॉ. अर्चना कुमारी
सहायक प्राध्यापक (विभागाध्यक्ष-हिन्दी)
एच. पी. एस. महा-, मधेपुर, (मधुबनी)
ल. ना. मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा,
बिहार, भारत।

Corresponding Author :
डॉ. अर्चना कुमारी
सहायक प्राध्यापक (विभागाध्यक्ष-हिन्दी)
एच. पी. एस. महा-, मधेपुर, (मधुबनी)
ल. ना. मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा,
बिहार, भारत।

भारत में स्त्री-शिक्षा की समस्याएँ

सारांश :-

किसी भी देश की प्रगति के लिए वहाँ की स्त्रियों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। शिक्षित नारी ही परिवार और समाज को सुसंस्कृत करने में समर्थ होती है। एक शिक्षित नारी पूरे देश को शिक्षित कर सकती है, लेकिन अफसोस की बात यह है कि 21 वीं सदी के विकसीत भारत में आज भी ऐसे जिले और गाँव है जहाँ लड़कियों को शिक्षा से वंचित रखा जाता है। माता-पिता लड़कियों को स्कूल जाने से वंचित करते है। देश के ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी लड़कियों की शिक्षा पर पैसा खर्च करना व्यर्थ माना जाता है। आज समय की जरूरत है कि माता-पिता को लड़कियो की शिक्षा और उससे होने वाले लाभों के बारे में जागरूक किया जाय। यह न केवल सरकार का कर्त्तव्य है बल्कि समाज की भी जिम्मेदारी है।

कूटशब्द:-स्त्री, पुरूष, समाज, राष्ट्र, विकास, शिक्षा, स्वतंत्रता, बाधाएँ, परिवार।

प्रस्तावना -

देश की लगभग आधी आबादी महिलाओं की है लेकिन अशिक्षा का सबसे अधिक नुकसान नारी जाति को उठानी पड़ी है। महिलाओं को शिक्षित करना भारत में कई सामाजिक बुराइयों को दूर करने की कुंजी साबित हो सकती है। परिवार, समाज तथा राष्ट्र के सर्वांगिन विकास के लिए स्त्री सहयोगी अंग बने-यही स्त्री शिक्षा

का मूल उदेश्य है।

आलेख:-

स्त्री ईश्वर की सुन्दरतम् कृति है साथ ही पुरूष की अनुपम सहधर्मिणी भी। पुरूष गृह पति है तो स्त्री गृहलक्ष्मी। वह पुत्री के रूप में सत्यं का, पत्नी के रूप में सुन्दरं का तथा माता के रूप में शिवं को रूपायित करती है। भारतीय समाज में स्त्री को हम एक अधीन, सहयोगी, लज्जाशील, वात्सल्य की प्रतिमूर्ति के रूप में देखते आए है। इन सभी विशेषणों का सीधा संबंध परिवार और समाज से होता हुआ राष्ट्र तक जाता है। स्त्री पुरूष के मिलने से परिवार बनता है, परिवारों की आपसी अन्तर्क्रिया द्वारा समाज का निर्माण होता है और यही समाज अनुकूल परिस्थितियाँ पाकर राष्ट्रीय भावना का विकास करता है। जब स्त्री और पुरूष समाज के एक सिक्के के दो पहलू है तो फिर शिक्षा भी एक समान प्राप्त होनी चाहिए। जिस तरह पुरूष का शैक्षिक जीवन समाज के लिए महत्वपूर्ण है उसी प्रकार नारी शिक्षा भी देश हित के लिए आवश्यक है। फिर भी, सदियों से महिलाओं को भेदभाव और हासिए पर रखा है।

शिक्षा के बिना संस्कार का कोई स्थान नहीं है और शिक्षित माँ ही संस्कार का उपचार है। संस्कृत में एक उक्ति प्रसिद्ध है -

"नास्ति विद्यासमं चक्षुर्नास्ती मातृ समोगुरू"।

इसका अर्थ है कि इस दुनिया में विद्या के समान कोई क्षेत्र नहीं है और माता के समान कोई गुरू नहीं है। प्राचीन काल से हमारा देश नारी के प्रति श्रद्धापूर्ण और सम्मानजनक रहा, परन्तु समय काल से शोषण नारी को क्षति पहुँचाता रहा।

वैदिक साहित्य में गार्गी, मैत्रेयी, शकुन्तला आदि अनेक विदुषियों की चर्चा मिलती है जो इस बात के प्रमाण है कि वैदिक काल में नारियों को भी पुरूषों के समान शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था। परन्तु केवल गिनी-चुनी कुछ ही विदुषी नारियों की चर्चा मिलने से इस बात का संकेत मिलता है कि सम्भवतः इस समय नारी शिक्षा अत्यंत सीमित थी तथा केवल समाज के संभ्रान्त परिवारों की नारियां ही शिक्षा प्राप्त कर पाती थी। उस समय नारियों के लिए अलग शिक्षण संस्थानों की व्यवस्था नहीं थी। उत्तर वैदिक काल में बाल-विवाह का प्रचलन प्रारंभ होने के कारण नारियों की शिक्षा में व्यवधान उत्पन्न होने लगे थे।

बौद्ध काल में भगवान बुद्ध ने नारियों को संघ में प्रवेश करने की अनुमति देकर नारी शिक्षा को एक नया आयाम दिया, जिसके कारण नारी शिक्षा को एक नया जीवन मिला। परन्तु यह शिक्षा भी केवल कुलीन घरानों की नारियों तक ही सीमित रही। परिणामतः बहुत समय तक सामान्य नारियों की शिक्षा लगभग अपेक्षित रही।

मुस्लिम काल में भी सामान्य नारियों की शिक्षा अपेक्षित ही थी। उस काल में बाल-विवाह तथा पर्दा प्रथा का प्रचलन होने के कारण छोटी-छोटी बालिकाओं के अतिरिक्त अन्य सभी नारियाँ शिक्षा प्राप्ति के अवसरों से प्रायः वंचित ही रह जाती थी। ब्रिटिश शासन के प्रथम चरण में नारी शिक्षा को अनावश्यक समझ कर उस पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया। नारियों के अनेक अंधविश्वासों से घिरे रहने के कारण तथा भारतीय दृष्टिकोण अत्यंत रूढ़िवादी होने के कारण सम्भवतः ईस्ट इंडिया कंपनी ने नारी शिक्षा में कोई रूचि नहीं ली। सन् 1854 में वुड के आदेश-पत्र में अधिकारिक तौर पर सबसे पहले नारी शिक्षा के महत्व को स्वीकार किया गया तथा नारियों की शिक्षा में प्रसार के सभी संभंव प्रयास किये जाने की सिफारिश की गई। सन् 1902 तक नारी शिक्षा एक आंदोलन का रूप ग्रहण कर लिया था। आर्य समाज, ब्रह्म समाज जैसी समाज सुधारक संस्थाओं ने नारी शिक्षा पर विशेष बल दिया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात नारी शिक्षा के क्षेत्र में केन्द्र तथा राज्य सरकारों नें भी महत्वपूर्ण कार्य किया है। भारत के संविधान में महिलाओं एवं पिछड़े वर्गों की शिक्षा के लिए विशेष प्रावधान किया गया। कोठारी आयोग ने भी बालिका शिक्षा की समस्याओं का अध्ययन किया और महत्वपूर्ण सुभाव उपस्थित किये।

भारत में आज भी निरक्षर की संख्या ज्यादा है। निरक्षरता के कारण वे शिक्षा का महत्व नहीं जान पाते है, जिसके कारण वे

अपने बच्चों को शिक्षित बनाने की ओर ध्यान नहीं देते। भारतीय समाज में आज भी बहुत सारी समस्याएँ विद्यमान है जो नारी शिक्षा में बाधाएँ उत्पन्न करती है। जैसे-अल्पायु में शादी, पर्दा-प्रथा, कन्या विद्यालय की कमी, शिक्षिकाओं का अभाव, सामाजिक रूढ़ियां, आवागमन की सुविधाओं का अभाव इत्यादि। सबसे बड़ी बाधा तो नारी स्वयं है। एक माँ बेटों के साथ अलग व्यवहार करती है और बेटी के साथ अलग। स्त्रियाँ दोहरी मानासिकता के जकड़न में छटपटा रही है। संविधान और कानून में बराबरी का दर्जा दिए जाने के बावजूद महिलाओं की स्थिति दयनीय है। शिक्षा के अभाव में शोषण अभी बन्द नहीं हुआ है। एक तरफ कन्या पूजनीय है तो दूसरी तरफ कन्या भ्रूण हत्या। यदि वह जन्म भी ले तो पालते समय उसके साथ दुर्व्यवहार की प्रवृत्ति अपनायी जाती है। भारतीय समाज में स्त्री शिक्षा की समस्याएँ अभी भी विद्यमान है।

निष्कर्षत:-

स्त्री शिक्षा का प्रभाव परिवार, समाज और देश के हर क्षेत्र में अहम योगदान देता है। एक शिक्षित स्त्री के कारण देश की आर्थिक स्थिति और घरेलू उत्पादन में बढ़ोतरी होती है। अतः स्त्री शिक्षा की बाधाओं को दूर करने के लिए जनता को जागरूक बनाने, आर्थिक कठिनाइयों को दूर करने, कन्या विद्यालयों की संख्या में वृद्धि, आवागमन के साधनों की व्यवस्था होनी चाहिए। स्त्री-शिक्षा के लिए विशिष्ट योजनाएँ बनायी जाये और इस योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए अपेक्षित आर्थिक साधनों की व्यवस्था की जाय।

संदर्भ ग्रंथ:-

1. प्रसाद के नाटकों में स्त्री-आस्मिता-डॉ. दीनानाथ, अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद।
2. नवदीप गाइड-नवदीप पब्लिकेशन, दीपगंगा कॉम्प्लेक्स अशोक राजपथ, पटना।
3. प्रतियोगिता साहित्य सीरीज (यू. जी. सी. नेट./जे. आर. एफ.), डॉ. अशोक तिवारी।
4. स्त्री-असामताः एक विमर्श'-गोपा जोशी, साहित्य भवन प्रकाशन, आगरा।